कृपया अपनी बाईबल के हर एक वचन को ध्यान से और पूरी तरह से पढ़ें।

ज्यादातर वचन अंग्रेजी की किंग्स जेम्स वर्शन की बाईबल से लिए गए हैं।

आज हम **विश्वास** के दूसरे भाग की पढ़ाई को जारी करेंगे।
पिछले पाठ में हमने देखा कि एक मसीही का विश्वास अति पवित्र विश्वास में बढ़ना चाहिए, जैसा की यहूदा 1:20 वचन में बताया गया है।

☞ **अति पवित्र विश्वास (यहूदा:20)**

यहूदा:20 “पर हे प्रियों, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए,”

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

और यह विश्वास बाईबल की शिक्षाओं पर आधारित है **केवल जिसपर सच्चाई** होने के लिए **भरोसा किया जा सकता है**। **(यूहन्ना 17:17)**

यूहन्ना 17:17 "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है"

☞ आज हम इस अति पवित्र विश्वास और चर्च में **बाईबल के ज्ञान** से **"भटक जाने"** के बारे में और **यह कैसे हुआ** पढ़ेंगे।

आइये हम एक भविष्यद्वाणी को पढ़कर इस पाठ की शुरुवात करते हैं -

2 कुरिन्थियों 11:3 "परन्तु मैं डरता हूं कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए कहीं भ्रष्ट न किए जाएं"

यहाँ पर प्रेरित पौलुस डरते हैं कि जैसे अदन में हव्वा को बहकाया गया वैसे ही चर्च को भी बहकाया जाएगा।

☞ ऐसा **क्यों** है, आपको आश्चर्य हो सकता है कि चर्च की तुलना हव्वा के साथ क्यों की गई है?

हम सब जानते हैं कि आदम और हव्वा ही थे जिन्होंने जातियों को उत्पन्न किया, लेकिन... **"मृत्यु"** में जैसा की हम बहुत स्पष्ट रूप से एक वचन में पढ़ते हैं--

रोमियो 5:12 "इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया"

लेकिन हम पढ़ते हैं कि सही समय पर एक **"दूसरे आदम"** का आना होगा -

1 कुरिन्थियों 15:45 "ऐसा ही लिखा भी है, कि प्रथम मनुष्य, अर्थात आदम, जीवित प्राणी बना और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना"

और वहां **दूसरी हव्वा** भी होगी...

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जो कि कोई और नहीं, बल्कि **चर्च (कलीसिया)** है!
जी हाँ! यीशु की एक दुल्हन भी है!!
उनकी **कलीसिया (चर्च)** --**दूसरी हव्वा**!

हमारा अती पवित्र विश्वास

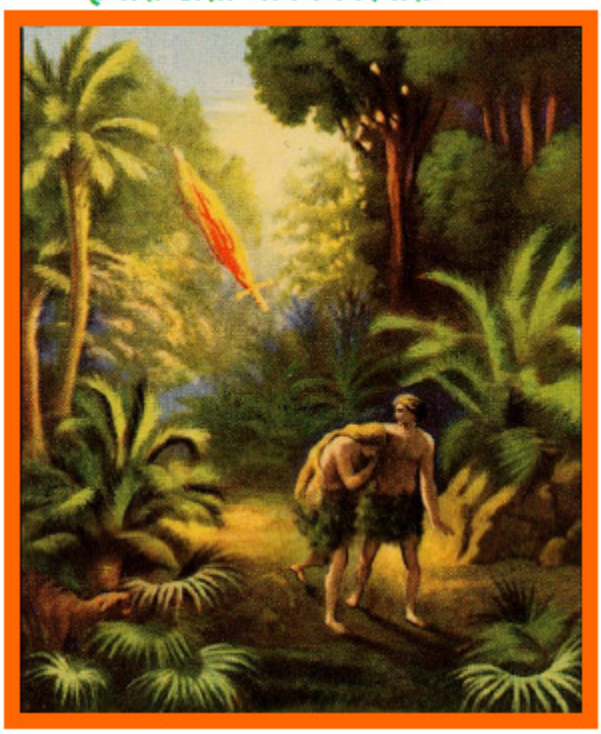

और शैतान **झूठे उपदेशों के द्वारा** चर्च को धोखा देने की बहुत चेष्टा कर रहा है, जैसा कि उसने अदन की वाटिका में हव्वा के साथ किया था। और प्रेरित पौलुस 2 कुरिन्थियों 11:3 में यही व्यक्त कर रहे थे।

☞ आइये हम देखें कि **कैसे शैतान ने** प्राचीन (आरम्भ की) कलीसिया के समय से ही **धोखा देना** कैसे चालू किया।

हम एक वचन में पढ़ते हैं -

गलातियों 3:1 हे निर्बुद्धि गलातियो, किसने तुम्हें मोह लिया है? तुम्हारी तो मानों आंखों के सामने यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! इस वचन में गलातियों की कलीसिया को प्रेरित पौलुस के द्वारा डाँटा जा रहा है क्योंकि यहूदी (मूसा) कानून का पालन करने के बारे में उनके बीच में **भ्रम** उत्पन्न हो गया था।

☞ मूसा का कानून एक मसीही को रखना चाहिए कि नहीं, यह विषय आरम्भ की कलीसिया में एक **बड़े भ्रम** का कारण था!!

आरम्भ की कलीसिया के **सारे सदस्य यहूदी थे** और वे मूसा के **कानून** का पालन कड़ाई से करते थे, और ऐसी कड़ी परम्परा के कारण दो मन में थे ... कि प्रभु यीशु का चेला बनने के बाद उन्हें मूसा के

➡ **...कानून का पालन करना चाहिए... या नहीं!**

इस मामले के बारे में हम फिर से एक और वचन में पढ़ते हैं -

प्रेरितों 15:1 फिर कुछ लोग यहूदिया से आकर भाइयों को सिखाने लगे: "यदि मूसा की रीति पर तुम्हारा खतना न हो तो तुम उद्धार नहीं पा सकते"

यह वचन हमें दूसरी घटना के बारे में बताता है जिसमें आरम्भ की कलीसियाओं में यहूदी इसाईयों के बीच में मूसा के कानून का पालन करने की समस्या थी!

जी हाँ! शुरू के यहूदी इसाईयों को बहुत भ्रम था कि उन्हें इसाई बनने के बाद मूसा के कानून का पालन करना चाहिए या नहीं!

➡ और शैतान ने उन्हें **आगे और भ्रमित करने** का प्रयास किया!

शैतान के **भ्रमित** करने का कार्य / धोखा देने का कार्य प्रेरितों के दिनों में ही आरम्भ हो गया था।

➡ **कल्पना करें कि आज के समय में शैतान कैसे-कैसे धोखे देगा!**

☞ और हम एक और प्रकार के धोखे के बारे में एक वचन में पढ़ते हैं...

1 कुरिन्थियों 15:12 "इसलिए जब कि मसीह का यह प्रचार किया जाता है कि वह मरे हुओं में से जी उठा, तो तुम में से कितने कैसे कहते हैं कि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं?

जी हाँ! इस वचन में हम देखते हैं कि **शैतान ने पुनरुत्थान पर ही सन्देह** ला दिया,

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इस प्रकार से शैतान आरम्भ की कलीसिया के शुरूआत के दिनों में **"जी उठे मसीह"** के सुसमाचार को निष्प्रभाव करने का प्रयास कर रहा था।

☞ बाद की शताब्दियों में, इस गलत उपदेश का उपयोग बहुत बाद में **कुरान** (इस्लामी) सिद्धान्तों को बनाने के लिए किया गया कि मसीह वास्तव में क्रूस पर मरा **नहीं** था।

➡ **उनका मानना था कि क्रूस पर कोई और मरा था... वे यही दावा करते हैं!!**
(कुरान में इसके बारे में सूरा अन -निसा IV:157 आयत में लिखा गया है)

157: "और उनके इस कथन के कारण कि मरियम के बेटे ईसा मसीह, अल्लाह के रसूल को क़त्ल कर डाला - हालाँकि न तो इन्होनें उसे क़त्ल किया और न उसे सूली पर चढ़ाया, बल्कि मामला उनके लिए सन्दिग्ध हो गया। और जो लोग इसमें विभेद कर रहे हैं, निश्चय ही वे इस मामले में सन्देह में थे ...." **कुरान**

हमारे प्रभु यीशु और प्रेरित पौलुस ने इस **तरह के** धोखों और धोखा देनेवालों **के बारे में चेतावनी दी है**, जिसके बारे में हम एक वचन में पढ़ते हैं -

प्रेरितों 20:29,30 "मैं जानता हूं कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आएंगे जो झुंड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे--ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे"

इस वचन में प्रेरित पौलुस **'भेड़ियों'** के जैसे झूठे भविष्यद्वक्ताओं से झुण्ड के लिए खतरे की चेतावनी दे रहे थे जिसके बारे में प्रभु यीशु ने खुद भी **बहुत पहले चेतावनी दे दी थी**, जो कि इस वचन में दर्ज है -

मत्ती 7:15 "झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेस में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में फाड़ने वाले भेडिए हैं"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! वे **"भेड़ों के भेस"** में आते हैं, लेकिन **अन्तर** में वे **"फाड़नेवाले भेडिए"** हैं।

☞ इसका मतलब क्या है?

यहाँ पर "भेड़ों का भेस" **बाहरी रूप से** दया के आवरण को दर्शाता है, सौम्यता आदि को दर्शाता है, लेकिन उनका हृदय (**"अन्दरूनी"** रूप से) **खुद के लिए लाभ** का इरादा रखता है ठीक वैसे ही जैसे भेड़िया हमेशा भेड़ को खाने की ताक में रहता है!!

जी हाँ! यह भविष्यद्वाणी झूठे भविष्यद्वक्ताओं के पास ऐसा चरित्र होता है, यह बताता है!

अब अगला सवाल होगा कि --

☞ **भविष्यद्वक्ता कौन है?** और भविष्यद्वाणि का सच्चे में मतलब क्या है? आजकल के चर्चों में हम जो देखते हैं कि भविष्यद्वाणि का मतलब **दूसरों** की **समस्याओं** के बारे में बताना, उनके निजी मामलों के बारे में सार्वजनिक प्रार्थनासभाओं में बताना समझा जाता है, **क्या ये** भविष्यद्वाणी है**??**

आइए इसका उत्तर हम बाईबल में देखें!

इसके बारे में हम एक वचन में पढ़ते हैं --

प्रकाशितवाक्य 19:10 "...परमेश्वर ही को दण्डवत् कर; क्योंकि यीशु की गवाही भविष्यद्वाणी की आत्मा है"

जी हाँ! **'यीशु की गवाही'** ही **'भविष्यद्वाणी की आत्मा'** है।

इसके बारे में पूरी बाईबल में इशारे वाली और दृष्टान्त वाली भाषा में दर्ज किया गया है।

इसलिए इन वचनों को समझाना और पढ़ाना ही **सच्ची** भविष्यद्वाणी है और जो ऐसा करता है **<u>वही सच्चा भविष्यद्वक्ता और शिक्षक है</u>**।

☞ लेकिन यहाँ यीशु **झूठे शिक्षकों** के बारे में चेतावनी देते हैं जो कि बाहर से सौम्यता और दया का **"चोला"** पहनते हैं परन्तु वास्तव में झुण्ड के आत्मिक जीवन को **अपने निजी स्वार्थी लाभ** के लिए नष्ट करने का इरादा रखते हैं।

प्रेरित यहून्ना ने भी ऐसे झूठे शिक्षकों के बारे में लिखा है --

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
<u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

1 यूहन्ना 4:1,2 “हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो, वरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं। परमेश्वर का आत्मा तुम इसी रीति से पहचान सकते हो: जो आत्मा मान लेती है कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है वह परमेश्वर की ओर से है”

इस वचन में प्रेरित यहून्ना बताते हैं कि **“हर एक आत्मा की प्रतीति न करो”**

➡ “वरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं”

इसका मतलब क्या है?

क्या वो हमसे रात में भूत-प्रेत को परखने और जाँचने के लिए कह रहे हैं, जिन्हें साधारणतय "आत्मा" कहकर बुलाया जाता है?!!

नहीं!

यहाँ पर जिस "आत्मा" शब्द का उपयोग किया गया है, इसका उपयोग पवित्रशास्त्र में विभिन्न अर्थों के लिए किया गया है लेकिन मूल रूप से 'आत्मा' शब्द का सम्बन्ध उससे है **जो... अदृश्य है... लेकिन अत्यन्त शक्तिशाली है**।

पवित्रशास्त्र में "आत्मा" शब्द के **तीन** अर्थ हैं, **जिनके बारे में हम पढ़ेंगे-**

➡ 1 सभोपदेशक 12:7 “...और आत्मा परमेश्वर के पास जिस ने उसे दिया लौट जाएगी”

यह वचन हमें "आत्मा" शब्द के पहले मतलब को बताता है।

...यहाँ पर "आत्मा" का मतलब है --**जीवन की साँस**

जो कि देह में जीवन को सक्रिय करती है और जीवन बनाये रखती है।

ये **अदृश्य** भी है और कितनी **शक्तिशाली** भी है!

फिर से हम “आत्मा” का एक और मतलब पढ़ते हैं, इन वचनों में -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

2 दानिय्येल 2:1 "... नबूकदनेस्सर ने ऐसा स्वप्न देखा जिस से उसका मन बहुत ही व्याकुल हो गया और उसको नींद न आई"

यह वचन हमें "आत्मा" के दूसरे मतलब के बारे में बताता है।
अंग्रेजी में इस वचन में **मन** के लिए 'आत्मा' शब्द का उपयोग किया गया है।
इस वचन में 'आत्मा' का सम्बन्ध 'मन' से है।

"आत्मा" शब्द का दूसरा मतलब है "मन" (mind)।
जी हाँ! मन भी अदृश्य है और शक्तिशाली है!
एक ऐसे शरीर और जीवन की कल्पना करें जिसमें "मन" (Mind-दिमाग) नहीं हो?
इसका **जवाब** पाने के लिए आप सिर्फ अपने पड़ोस के पागलखाने का दौरा लगायें!
लेकिन **1 यहून्ना 4:1** वचन में "आत्मा" शब्द का क्या अर्थ है?

1 यूहन्ना 4:1 "हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो..."

☞ क्या इसका सम्बन्ध **"साँस"** या **"मन"** से है?
☞ -"...**<u>हर एक साँस</u>** की प्रतीति न करो"! **अथवा** ... "...**<u>हर एक मन</u>** की प्रतीति न करो"!
☞ नहीं! इस वचन में 'आत्मा' शब्द का अर्थ "साँस" या "मन" **नहीं** है!

तब अवश्य 'आत्मा' शब्द का एक तीसरा अर्थ भी होगा!
आइये हम देखें, एक वचन में पढ़कर -

3 यूहन्ना 6:63 "...जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं <u>वे आत्मा है</u>, और जीवन भी हैं"

यहाँ पर प्रभु यीशु "आत्मा" शब्द का **तीसरा** अर्थ सिखाते हैं!
जी हाँ! इस वचन में "आत्मा" शब्द **शिक्षाओं या उपदेशों** को दर्शाता है।
इसलिए 1 यूहन्ना 4:1 वचन में प्रेरित यूहन्ना **<u>हर किसी उपदेश पर यकीन नहीं करने</u>** की चेतावनी दे रहें थे और हर एक **वचन** को या बात को परखने के लिए कह रहे थे,

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
<u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

ठीक वैसे ही जैसे **बिरिया वासी** किया करते थे, जिसके बारे में हम एक वचन में पढ़ते हैं --

प्रेरितों 17:11 "ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे, और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्र शास्त्रों में ढूंढते रहे कि ये बातें योंही हैं कि नहीं"

जी हाँ! आरम्भ की कलीसिया में **सत्य** के प्रति **सतर्कता** और **वफादारी** का कितना अच्छा एक उदाहरण बिरियावासियों के द्वारा दिखाया गया था!

☞ लेकिन कलीसिया और उसकी बाद की उन्नति और घटनाक्रम के बारे में प्रेरित पौलुस ने यह भविष्यद्वाणी की थी --

1 तीमुथियुस 4:1,2 "परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है, कि आनेवाले समयों में कितने लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे..."

जी हाँ! ठीक पहली सदी में --आरम्भ की कलीसिया की अवधि में प्रेरित पौलुस ने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से "आने वाले समयों" की हालत के बारे में भविष्यद्वाणियाँ कर दी थी

...लगभग 200-300 वर्षों के बाद की हालत के बारे में!

1 तीमुथियुस 4:1,2 का वचन **तीसरी** और **चौथी** सदी में पूरा होना चालू हो गया, जब वास्तव में कुछ मसीही "विश्वास से बहकने लगे" और

➡ "भरमाने वाली आत्माओं" **(लुभावने और धोखा देने वाले उपदेशों)**

➡ और... "दुष्ट आत्माओं की शिक्षाओं" **(अन्य जातियों के विश्वास)**

➡ और... "झूठे मनुष्यों के कपट" पर विश्वास करने लगे

➡ और... "झूठे मनुष्य विवाह करने से रोकेंगे और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे" (1 तीमुथियुस 4:3)

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

☞ **इसका क्या मतलब है?**

इन सब बातों की पूर्ति **रोमन कैथोलिक चर्च** की बढ़ोतरी के लिए हुई -

➡ उस चर्च में बहुत से ऐसे उपदेशों का प्रचार किया गया जो **बाईबल से सम्बन्धित नहीं है** और इन उपदेशों को स्वीकार भी किया गया।

हम इनके बारे में भविष्य की कक्षाओं में पढ़ेंगे जब हम **आत्मा, नरक, उद्धार, पापों की क्षमा आदि** विषयों के बारे में पढ़ेंगे।

पवित्रता की प्रतिज्ञा के साथ (शादी न करना या कुँवारा रहना) एक प्रीस्टहुड या सिस्टरहुड की शुरुवात भी रोमन कैथोलिक चर्चों में हुई थी, जबकि पवित्र शास्त्र में स्पष्ट रूप से बिशप (अध्यक्ष) के लिए इसके विपरित सिखाया गया है। इसके बारे में हम एक वचन में पढ़ते हैं --

1 तीमुथियुस 3:2 “यह आवश्यक है कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, अतिथि-सत्कार करनेवाला, और सिखाने में निपुण हो”

इसके बाद “**शुक्रवार** को मांस नहीं खाने का आदेश आया” ताकि प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु का स्मरण किया जा सके लेकिन पवित्र शास्त्र ऐसी शिक्षा **नहीं देता**।

(आरम्भिक कलीसिया के कई वर्षों के इतिहास के लिए प्रेरितों की पुस्तक को देखें)।

इस प्रकार से चर्च और उसकी बढ़ोतरी के बारे में की गई यह भविष्यद्वाणी पूरी हुई।

बाद हम एक और भविष्यद्वाणी के बारे में पढ़ते हैं -

2 तीमुथियुस 4:2-4 “कि तू वचन को प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और डांट और समझा। क्योंकि ऐसा समय आएगा जब लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे, पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुते से उपदेशक बटोर लेंगे, और अपने कान सत्य से फेरकर कथा-कहानियों पर लगाएंगे”

ये उसी प्रकार की एक और भविष्यद्वाणी है जो **सच्चाई से बहक कर “कथा-कहानियों” (झूठे उपदेशों/असत्य)** की और फिरने के बारे में बताती है।

लेकिन प्रेरित पौलुस दूसरे वचन **(2 तीमुथियुस 4:2)** में भाईयों को यह सलाह देते हैं --

☞ "तू वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह"-- इसका मतलब यह है कि

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

किसी को अवश्य सतर्क और हर समय तैयार रहने वाले सत्य का सेवक होना चाहिए, भले ही हमारे लिए परिस्थिति **सुविधाजनक** हो या **असुविधाजनक** हो।
लेकिन हमारे खुद के मामले के विपरीत **दूसरों** की सुविधा का हमेशा सम्मान किया जाना चाहिए।

☞ "सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा" -- सच्चाई को पूरे उत्साह और प्रयत्न के साथ संरक्षित किया जाना चाहिए और जैसा की हम बहुत स्पष्टता से एक वचन में पढ़ते हैं, **हमें सच्चाई को प्रेम से और धीरज से बोलना चाहिए** --

इफिसियों 4:15 "वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं"

☞ **इस प्रकार आरंभिक कलीसिया में हम धोखे की शुरुआत और अति पवित्र विश्वास (बाइबल के ज्ञान) से दूर हटना और इन के बारे में भविष्यद्वाणियाँ देख सकते हैं।**

अब हमें अवश्य यह याद रखना चाहिए कि **आरंभिक मसीही कलीसिया (चर्च)** 5 मुख्य केंद्रों (शहरों) में स्थापित किये गये थे।

➡ 1. इस्राएल के **यरूशलेम** में

➡ 2. यूनान देश के **अन्ताकिया** में जहाँ से पहले पहल मसीही नाम की शुरुआत हुई, जैसा की हम इस वचन में पढ़ते हैं -

प्रेरितों 11:26 "जब वह उससे मिला तो उसे अन्ताकिया लाया; और ऐसा हुआ कि वे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ मिलते और बहुत लोगों को उपदेश देते रहे; और चेले सब से पहिले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए"

➡ 3. उत्तरी मिस्र के **सिकन्दरिया** में

➡ 4. टर्की के **इस्तान्बुल** में

➡ 5. इटली के **रोम** में

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

चर्च का आयोजन किया गया था, ताकि चर्च के उच्चतम कार्यालय को अध्यक्ष यानि बिशप सम्भाले और वचन में अध्यक्ष के बारे में यह बताया गया है --

1 तीमुथियुस 3:1-2 "...यह आवश्यक है कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, अतिथि-सत्कार करनेवाला, और सिखाने में निपुण हो"

वचनों के अनुसार एक "अध्यक्ष" के कार्यालय का स्थान चर्च में सर्वोच्च होता था। वो **प्रधान सेवक** होता था और अलग-अलग स्थानों और बड़े नगरों के लिए अलग-अलग अध्यक्ष होते थे।
इस प्रकार से मसीही चर्च में बहुत सारे अध्यक्ष होते थे और **सभी चर्चों** के कल्याण के लिए वे आपस में मिल कर बातचीत करते थे।
प्रेरित यहून्ना और प्रेरित पौलुस ने भी अध्यक्ष के रूप में सेवा की थी। लेकिन इनमें से किसी के भी पास **कोई उपाधि या पदवी नहीं थी।**

प्रकाशितवाक्य 1:9 "मैं यूहन्ना, जो तुम्हारा भाई और यीशु के क्लेश और राज्य और धीरज में तुम्हारा सहभागी हूं, परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही के कारण पतमुस नाम टापू में था"

फिलिप्पियों 1:1 "मसीह यीशु के दास पौलुस और तीमुथियुस की ओर से, सब पवित्र लोगों के नाम, जो मसीह यीशु में होकर फिलिप्पी में रहते हैं, अध्यक्षों और सेवकों समेत"

यदि हम आज के बिशप और पादरियों पर नज़र डालें तो देखेंगे की
"आदरणीय" की पदवी का प्रयोग करना तो आम बात है।

क्या आप जानते हैं कि वचनों में यह पदवी किसे दी गई है?
आइए हम एक वचन में पढ़ें --

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

भजन संहिता 111:9 “उसने अपनी प्रजा का उद्धार किया है; उसने अपनी वाचा को सदा के लिये ठहराया है। उसका नाम पवित्र और भययोग्य है”

Bishops and Pastors use “REVEREND” title very commonly. But, in the KJV Bible, this title is used for our Heavenly Father.

“REVEREND”→ “भययोग्य” या "आदरणीय"

जी हाँ! "आदरणीय" या “भययोग्य” की पदवी का उल्लेख **महान सर्वशक्तिमान परमेश्वर** के लिए किया गया है और इसे दूसरे भाषा के अनुवादों में **“विस्मयकारी” या “अदभूत”** कहा गया है।

☞ अब परमेश्वर की रचना के अनन्त कार्यों को देखते हैं --

उनके सितारों का ब्रह्मांड और अनन्त **अंतरिक्ष** को जब हम देखते हैं तो उनकी सृष्टि या रचना हमें “अदभूत” या “विस्मयकारी” (awesome) लगती है!

तो फिर उसको रचने वाला सृष्टिकर्ता खुद कैसा होगा, **उसकी कल्पना करें**!?

☞ क्या कोई भी बिशप या पादरी परमेश्वर के तुल्य हो सकता है?
या परमेश्वर की पदवी को अपने लिए प्रयोग में ले सकते हैं?

इसके बाद हम एक दूसरे मामले के बारे में एक वचन में पढ़ते हैं --

मत्ती 23:9 “पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है”

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

यहाँ पर स्वामी, मसीही शिक्षकों के बीच में --धार्मिक मामलों में किसी को भी **"पिता"** (Father) बुलाने से मना कर रहें हैं।

क्यों कैथोलिक चर्च के लोग प्रभु यीशु के इस वचन को नहीं मानते?

और फिर से हम एक और मामले के बारे में पढ़ते हैं --

इफिसियों 1:22,23 “और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया; और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है”

यह वचन स्पष्ट रूप से सूचित करता है कि "प्रभु यीशु ही कलीसिया के शिरोमणि है"। इस वचन की रोशनी में देखने से "पोप" का यह **दावा** है कि वो कलीसिया का “शिरोमणि” है, **झूठा** दावा मालूम पड़ता है!!

“पोप” शब्द की उत्पत्ति **“पोपा”** (POPA) शब्द से हुई है, जिसका मतलब लैटिन भाषा में "पिता" होता है!!

रोमन कैथोलिक चर्च के पोप का यह **दावा** है कि वह चर्च का **शिरोमणि** है, एक वचन पर आधारित है -

मत्ती 16:18,19 “और मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा”

प्रभु यीशु के इस वचन का अर्थ रोमन कैथोलिक चर्च के लोग यह लगाते हैं कि प्रेरित पतरस को चर्च का **“मुखिया”** नियुक्त किया गया था... **और वे प्रथम पोप थे**... और **नींव का पत्थर** भी थे!

क्या यह सच है?

यदि यह बात सच थी तो आइये हम देखते हैं कि कुछ क्षणों के बाद स्वामी और पतरस के बीच में क्या हुआ। आइये इसके बारे में हम एक वचन में पढ़ें--

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

मत्ती 16:22,23 "इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा, "हे प्रभु, परमेश्वर न करे! तेरे साथ ऐसा कभी न होगा"। उसने मुड़कर पतरस से कहा, "हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो! तू मेरे लिये ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है"

यदि यह बात सच थी, कि पतरस उनकी कलीसिया का **"नया मुखिया"** था, तो लगभग तुरन्त प्रभु यीशु ने चर्च के **"नए मुखिया"** को **"शैतान"** कह कर बुलाया!!

क्या यह अजीब बात नहीं है?

तो फिर मत्ती 16:18,19 वचन का **सही** मतलब क्या है?

आइए हम इस मामले की तह तक जाने के लिए पीछे की परिस्थिति के बारे में वचनों से पढ़कर देखें समझे --

मत्ती 16:13-17 "यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रदेश में आया, और अपने चेलों से पूछने लगा, "लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?" उन्होंने कहा, "कुछ तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं, और कुछ एलिय्याह, और कुछ यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं"। उसने उनसे कहा, "परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?" शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है"। यीशु ने उसको उत्तर दिया, " हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है"

मत्ती 16:18,19 वचन के "**पहले की भूमिका**" एक **प्रशन** है!

-"लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?"...

इस प्रशन के उत्तर कई और विविध और भ्रमित थे!

तब यीशु ने अपने चेलों से पूछा -- **15 वाँ वचन**

"परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?" ...

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

और पवित्र आत्मा की सामर्थ से प्रेरित पतरस ने **सच** बोला!

और उसके बाद ही, प्रभु यीशु ने **18 वाँ वचन** बोला–"...और मै भी तुझ से कहता हूँ कि तू पतरस है, और मै इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा;..."

इस वचन में पतरस शब्द ग्रीक भाषा के **"Petros"** पेट्रोस शब्द से आता है जिसका मतलब है छोटा पत्थर, जबकि "इस **पत्थर पर**" शब्द के लिए ग्रीक भाषा में **"Petra"** (पेट्रा) शब्द का उपयोग किया गया है, जिसका मतलब है एक बड़ा पत्थर या बोल्डर (गोल पत्थर) ।

इन दो शब्दों के अर्थ में यह **स्पष्ट अन्तर** केवल ग्रीक भाषा ही में पाया जा सकता है और समझा जा सकता है!

और 18 वें वचन में जिस "पत्थर" पर यीशु ने अपनी कलीसिया बनाने की बात की थी, उसका अर्थ है

☞ ... **सत्य** की **नींव** पर कलीसिया स्थापित होगी। इसके बारे में हम एक वचन में पढ़ते हैं --

1 तीमुथियुस 3:15 "कि यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले कि परमेश्वर के घराने में जो जीवते परमेश्वर की कलीसिया है और जो सत्य का खंभा और नींव है, कैसा बर्ताव करना चाहिए"

☞ ...और यह नींव **खुद** प्रभु यीशु मसीह थे -- इसके बारे में भी हम एक वचन में पढ़ते हैं --

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

1 कुरिन्थियों 3:11 “क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता”

यीशु ने खुद को "सत्य" के रूप में एक वचन में एक वचन में प्रस्तुत किया है --

यूहन्ना 14:6 “यीशु ने उससे कहा, “मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता”

इस प्रकार यीशु पतरस को **खुद** के बारे में कलीसिया की नींव के रूप में बता रहे थे! हालांकि पतरस "नई यरूशलेम" के 12 नींव के पत्थरों में से **एक** है, जिसके बारे में हम इस वचन में पढ़ते हैं -

प्रकाशितवाक्य 21:14 “नगर की शहरपनाह की बारह नींवे थीं, और उन पर मेम्ने के बारह प्रेरितों के बारह नाम लिखे थे”

अब हम देखेगें कि मत्ती 16:19 वचन में **"स्वर्ग के राज्य की कुंजियों"** का क्या मतलब है?

मत्ती 16:19 “मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा”

ये वे कुंजियां हैं जिनका आमतौर पर रोमन कैथोलिक और पोप के द्वारा **स्वर्ग** और **नरक** की चाबी होने का दावा किया जाता है!!

लेकिन क्या इसका मतलब यह है?

☞ चिन्ह के रूप में **"कुंजी"** या तो एक **अवसर या** एक बात **'के दरवाजे'** को **खोलने** के एक साधन को दर्शाता है।

☞ 'कुंजी' चिन्ह के रूप में दूसरे से **अधिकार की प्राप्ति को भी दर्शाता है**, जैसा कि एक वचन में पाया जाता है --

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

प्रकाशितवाक्य 1:18 "मैं मर गया था, और अब देख मैं युगानुयुग जीवता हूं; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास हैं"

इसलिए, चिन्ह के रूप में कुंजियों का अर्थ है ... **"दरवाजे को खोलने का एक अवसर"**

"स्वर्गीय समूह" के लोगों का सदस्य बनने का न्योता और अवसर का दरवाजा **पहले** पहल पतरस के द्वारा **दो वर्गों** के लिए खोला गया था --

यह दो "कुंजियां", जिन्हें पतरस ने खोले थे वे हैं -

☞ **यहूदियों** के लिए खोली गयी **कुंजी** जिन्हें पेंटेकोस्ट के दिन खोला गया था - **मई 33 AD**

(प्रेरितों 2:14-41 वचन बाईबल से पढ़ें।)

☞ **अन्यजातियों** के लिए खोली गई **कुंजी** जिन्हें कुरनोलियुस के घर पर खोला गया था - **अक्टूबर 36 AD**

(प्रेरितों 10:23-48 वचन बाईबल से पढ़ें।)

☞ हमारे प्रभु ने **"स्वर्ग के राज्य"** (जो इसाईयों को दर्शाता है) के इतिहास के बारे में दृष्टान्तों में भविष्यद्वाणी की है। स्वर्ग के राज्य के दौरान कुछ "राजाओं और याजकों" का चयन किया जाएगा--

प्रकाशितवाक्य 1:6 "और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिये याजक भी बना दिया; उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे"

सुसमाचार के युग में स्वर्ग के राज्य के विकास के बारे में **दो दृष्टान्तों** में जिक्र किया गया है--

आइए हम इन दृष्टान्तों के बारे में पढ़ें -

मत्ती 13:31,32 "उसने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया: "स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया। वह सब बीजों से छोटा

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

तो है पर जब बढ़ जाता है तब सब साग-पात से बड़ा होता है; और ऐसा पेड़ हो जाता है कि आकाश के पक्षी आकर उसकी डालियों पर बसेरा करते हैं"

☞ **इस दृष्टान्त का मतलब क्या है? या यह दृष्टान्त क्या दर्शाता है?**

यह दृष्टान्त **<u>पहली सदी में</u>** चर्च की स्थापना के काम की एक छोटी सी शुरुआत और फिर बाद में आनेवाले सदियों में इसके विकास का प्रतिनिधित्व करता है।

आइये अब हम इस दृष्टान्त के मतलब को समझें --

☞ "राई का एक दाना" ⇨ ठीक वैसे ही जैसे राई का दाना बहुत छोटा है, यह 12 प्रेरितों और कुछ चेलों के साथ चर्च की **बहुत छोटी** शुरुआत का प्रतिनिधित्व करता है।

☞ "जिसे किसी मनुष्य ने लेकर" ⇨ यह इस बात का प्रतिनिधित्व करता है कि राज्य के सुसमाचार के प्रचार का काम पहले यीशु ने **शुरू** किया, उसके बाद उनके प्रेरितों ने और चेलों ने प्रभु की नियुक्ति के अन्तर्गत इसे आगे बढ़ाया, जो कि हम **प्रेरितों 1:8** वचन में देखते हैं।

प्रेरितों 1:8 "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
<u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

☞ "अपने खेत में बो दिया" ⇨खेत **संसार** है **(मत्ती 13:38 वचन देखें)** --इस प्रकार से यह वचन पूरे विशव में सुसमाचार के काम का प्रतिनिधित्व करता है।

मत्ती 13:38 "खेत संसार है, अच्छा बीज राज्य के सन्तान, और जंगली बीज दुष्ट के सन्तान हैं"

☞ "पर जब बढ़ जाता है" ⇨यह निश्चित रूप से चर्च के विकास के **इतिहास** में अगले 300 - 1000 वर्षों के समय बीतने का प्रतिनिधित्व करता है!
आमतौर पर एक राई (सरसों) का पौधा बगीचे का पौधा है जिसकी ऊंचाई 2-3 फुट होती है लेकिन इस दृष्टान्त के मामले में एक **असामान्य** वृद्धि हुई थी!! -- वो "पेड़ हो जाता है"

इसी प्रकार इसाई धर्म की वृद्धि भी असामान्य थी और यह एक बड़ी संख्या का एक बड़ा धर्म बन गया!!

☞ "आकाश के पक्षी" ⇨ यह एक चिन्ह है जो "आकश के अधिकार के हाकिम" **(इफिसियों 2:2)** के दासों को दर्शाता है **<u>या बल्कि सांसारिक मानसिकता के लोगों को दर्शाता है</u>**, जो चर्च के भीतर सांसारिक लाभ और सम्मान को खोजते हैं।

इफिसियों 2:2 "जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है"

☞ "डालियों पर बसेरा करते हैं" ⇨ यह इस बात का प्रतिनिधित्व करता है कि कैसे सांसारिक मानसिकता के लोगों ने अधिकार और **<u>महत्व रखने वाले महत्वपूर्ण पदों को ले लिया है</u>** और चर्च प्रणाली में प्रवेश किया है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
<u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! मत्ती 13:31,32 वचन एक दृष्टान्त है! क्या यह दृष्टान्त चर्चों की विभिन्न शाखाओं की वर्तमान स्थिति को एक स्पष्ट भविष्यद्वाणी की तस्वीर नहीं है? (नाममात्र के ईसाई धर्म)

☞ और इसके बाद हम देखते हैं कि यीशु **मत्ती 13:33 वचन** में एक और दृष्टान्त सुनाते हैं --

मत्ती 13:33 "उसने एक और दृष्टान्त उन्हें सुनाया: "स्वर्ग का राज्य" खमीर के समान है जिसको किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिला दिया और होते-होते वह सब खमीरा हो गया"

इस दृष्टान्त का अर्थ पूरी तरह से समझने के लिए **तीन** मुख्य बिन्दुओं को समझना जरुरी है।

1. **"खमीर"** 2. **"किसी स्त्री"** 3. **"तीन पसेरी आटे"**

ये सभी **चिन्ह** है। आइये अब हम इनके मतलब को देखें, जैसा की **"खमीर"** शब्द का मतलब हम एक वचन में देखते हैं -

1. मत्ती 16:11 "तुम क्यों नहीं समझते कि मैंने तुमसे रोटियों के विषय में नहीं कहा, परन्तु यह कि तुम फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान रहना"

इन फरीसियों और सदूकियों का "खमीर" क्या था?

इसका उत्तर हम प्रेरितों 23:8 वचन में पढ़ते है।

प्रेरितों 23:8 "क्योंकि सदूकी तो यह कहते हैं, कि न पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत और न आत्मा है; परन्तु फरीसी इन सब को मानते हैं"

जी हाँ! **"खमीर" झुठे उपदेश** हैं।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

2. "जिसको किसी स्त्री ने लेकर"

☞ **यह स्त्री कौन है?**

बाईबल में "स्त्री" चर्च का **चिन्ह** है -- मसीह की एक सम्भावित दुल्हन, जैसा कि हम बाईबल के एक वचन में पढ़ते हैं -

2 कुरिन्थियों 11:2 "क्योंकि मैं तुम्हारे विषय मे ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं, इसलिये कि मैं ने एक ही पुरूष से तुम्हारी बात लगाई है कि तुम्हें पवित्र कुंवारी के समान मसीह को सौंप दूं"

लेकिन यहाँ मत्ती 13:33 वचन में की स्त्री स्पष्ट रूप से एक अच्छी स्त्री **नहीं** है!!

☞ **तो वह कौन है?**

वह एक **झूठी चर्च** है जिसका उल्लेख **प्रकाशितवाक्य 17:3** वचन में किया गया है।

प्रकाशितवाक्य 17:3 "तब वह मुझे आत्मा में जंगल को ले गया, और मैं ने लाल रंग के पशु पर, जो निन्दा के नामों से भरा हुआ था और जिसके सात सिर और दस सींग थे, एक स्त्री को बैठे हुए देखा"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जो कि असैनिक राजनैतिक शक्तियों या ➡ "पृथ्वी के राजाओं" के साथ **अवैध गठबन्धन** ("व्यभिचार") में है।

3. "तीन पसेरी आटे" ⇨ यह मसीही जीवन के तीन मूलभूत **"खम्भे"** का एक चिन्ह है - **विश्वास / आशा / प्रेम** जिसके बारे में हम एक वचन में पढ़ते हैं --

1 कुरिन्थियों 13:13 "पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई है, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है"

जी हाँ! इस तीन पसेरी आटे को **"जानबूझ कर क्रमानुसार" झूठे उपदेशों** के साथ मिलाकर खमीरवाला बना दिया और नष्ट कर दिया गया था। आइये हम देखें कि कैसे -

☞ "विश्वास" ➡ **"अति पवित्र विश्वास"** को **धर्म मत** यानि **creeds** (क्रीड्स) के द्वारा बदल दिया गया था (संक्षेप किये गए विश्वास की मान्यतायें --उदाहरण प्रेरितों के क्रीड्स या धर्म मत) और... बाईबल की पढाई को उपेक्षित किया गया था जबकि धीरे-धीरे **सांसारिक मान्यताओं और उपदेशों को** जो कि सांसारिक मामलों के लिए आम थे, चर्च की मान्यताओं और विश्वास में प्रवेश करने लगे थे। बाईबल की **सच्चाई** धीरे धीरे नज़रों से ओझल हो गयी थी! इसका प्रभाव कितना था इसे हम भविष्य की कक्षाओं में देख लेंगें जब हम **<u>गहराई से</u>** बाईबल के सभी सिद्धान्तों का अध्यन्न करेंगें।

☞ "आशा" ➡ प्रभु यीशु के **दूसरे आगमन पर** [2 तीमुथियुस 2:12]

➡ "यदि हम धीरज से सहते रहेंगें, तो उसके साथ राज्य भी करेंगें" की इस बड़ी **"आशा"** को **<u>इसी जीवन में</u>** राज्य करने के दावे से बदल दिया गया।

हम पढ़ते हैं कि यह आरम्भ के चर्च में ही शुरू हो गया -

1 कुरिन्थियों 4:8,10 "तुम तो तृप्त हो चुके, तुम धनी हो चुके, तुम ने हमारे बिना राज्य किया; <u>परन्तु भला होता कि तुम राज्य करते कि हम भी तुम्हारे साथ राज्य करते</u>। हम मसीह के लिये मूर्ख है, परन्तु तुम मसीह में बुद्धिमान हो; हम निर्बल हैं, परन्तु तुम बलवान हो। तुम आदर पाते हो, परन्तु हम निरादर होते हैं"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
<u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! आरम्भिक कलीसिया से ही **राज्य** करने और **दुनिया में इसी जीवन में सम्मान की खोज** करने का यह प्रयास आरम्भ हो गया!

☞ इस प्रकार से पवित्र रोमन साम्राज्य के **क्रूसेड** और... **मसीह** और क्रूस **के लिए युद्ध** महान रक्तपात और पीड़ा के कारण हुए!

जी हाँ! **बाद** में प्रभु यीशु के साथ राज्य करने के लिए **अभी** के समय में दुःख उठाने की धन्य आशा... पूरी तरह से खो गई थी!

☞ "प्रेम" ➡ अन्त में पिता और पुत्र का **"प्रेम"** ठंडा पड़ गया क्योंकि **व**चनों का सत्य, नज़रों से ओझल हो गया था और **स्वार्थ की सांसारिक प्रकृति** ने चर्च का नियंत्रण ले लिया था।

जी हाँ! मत्ती 13:33 वचन का दृष्टान्त यह दिखाता है कि कैसे चर्च की दृष्टि से सत्य खो गया और... कैसे मसीहियों को परमेश्वर के वचनों से मिले सच्चे सिद्धान्त भी खो गए।

यशायाह 29:13 वचन में हम एक **भविष्यद्वाणी** के रूप में **वर्तमान स्थिति** कैसी बन गयी है, इसके बारे में पढ़ते हैं -

यशायाह 29:13 "प्रभु ने कहा, ये लोग जो मुंह से मेरा आदर करते हुए समीप आते परन्तु अपना मन मुझ से दूर रखते हैं, और जो केवल मनुष्यों की आज्ञा सुन सुनकर मेरा भय मानते हैं"

जी हाँ! **क्रीड्स (धर्म मत)** और "मनुष्यों की विधियों" (मत्ती 15:9) और **झूठे** उपदेशों ने परमेश्वर का चित्रण **दशहत** के रूप में किया है, प्रेम के रूप में **नहीं**।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

यहाँ तक की गहरे अर्थ के गाने भी **केवल <u>होठों से</u> गाए जाते हैं, मन से नहीं**!
उदाहरण के लिए: **"All to Jesus I surrender"** या **"मेरे जीवन को स्वीकार करें"** गाना गाया जाता है, इसके बोल के शब्दों पर **<u>सोचे</u>** बिना, और वास्तव में यीशु के लिए अपना **<u>सब कुछ</u>** समर्पण किये बिना ही ये गीत केवल होठों से ही गाया जाता है।
☞ ये **इसाई धर्म** के आज की हालत के बारे में भविष्यद्वाणी है! (यशायाह 29:13)

☞ **क्या आज के समय में यह भविष्यद्वाणी भी पूरी नहीं हो गयी है?**

लेकिन हम आरम्भिक कलीसिया में **सत्य** और इसे करने की **प्रतिक्रिया** के बारे में एक वचन में पढ़ते हैं --
प्रेरितों 28:22 "परन्तु तेरा विचार क्या है? वही हम तुझ से सुनना चाहते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि हर जगह इस <u>मत के विरोध</u> में लोग बातें कहते हैं"

जी हाँ! सत्य और प्रभु के बुलावे को जनसाधारण के द्वारा स्वीकार **<u>नहीं</u>** किया जाएगा, चाहे वह आरम्भिक कलीसिया में हो या **<u>यहाँ तक कि उस समय से लेकर आज तक हो!</u>**

☞ **क्या आप जानते हैं कि मसीह के चेलों के लिए "इसाई" नाम लागू होने से पहले, वे किसी दूसरे नाम से जाने जाते थे?**

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
<u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! हम इसके बारे में इस वचन में पढ़ते हैं -

प्रेरितों 24:5 “क्योंकि हम ने इस मनुष्य को उपद्रवी और जगत के सारे यहूदियों में बलवा करानेवाला, और नासरियों के कुपन्थ का मुखिया पाया है”

इस वचन को हम अंग्रेजी की KJV बाईबल में देखेंगे क्योंकि इस वचन का अनुवाद हिन्दी में ठीक नहीं हुआ है।

Acts: 24:5 “… among all the Jesus throughout the world, and a ring leader of the sect of the Nazarene’s”

जी हाँ! यीशु के चेलों को -
“THE SECT OF THE NAZARENE” यानि **"नासरियों के दल"** का कहा जाता था।

“SECT” शब्द को ग्रीक भाषा में “Hairesis” कहते हैं, #139 (ग्रीक Concordance). इस “Sect” या "दल" शब्द का मतलब है --अपने स्वंय के मतों का पालन करने वाली मनुष्यों की एक संस्था।

मतलब यह हुआ कि, मसीह के चेलों को इसाई नाम देने से पहले उन्हें "नासरियों के दल" का कहा जाता था जो मसीह के मतों का पालन करने वाले मनुष्यों की एक संस्था के रूप में जाने जाते थे।

☞ इसी प्रकार से, आज भी **सच्चे विश्वास** यानि **सत्य** के पीछे चलने वाले सभी लोगों को भी एक **“दल” (sect)** या **“सम्प्रदाय” (cult)** माना जाता है।

लेकिन इन सब के बावजूद, परमेश्वर ने यह वादा किया है कि -

नीतिवचन 4:18 “परन्तु धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है, जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है”

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

☞ जी हाँ! एक **"धर्मी"** (गुरु के पीछे चलनेवाले) के लिए निरन्तर **"प्रकाश"** (सत्य) का वादा किया गया है। सारे **भ्रम** और **त्रुटियों** के बीच में, **सत्य** ("ज्योति") के मार्ग पर चलने में, विश्वासी लोगों से परमेश्वर के प्रेम और मार्गदर्शन का आश्वासन दिया गया है।

--आमीन-

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com